कला मुगलकालीन कला से लाक्षणिक रूप में भिन्न है।

(क) राजस्थानी चित्र शैली – राजस्थानी चित्र शैली को कई भागों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे –

(1) मेवाड़ की शैली – राजा भीम सिंह और जगत सिंह के समय में मेवाड़-शैली का अधिक उत्थान हुआ। उस समय अनेक हवेली, महल, मंदिर आदि चित्रित किए गए, पुस्तकों के अंदर भी चित्र बने। चित्रों पर वैष्णव भक्ति का प्रभाव है। चित्रों के विषय – गीत गोविंद, भागवत पुराण, रसिक प्रिया, कृष्ण भक्ति एवं रामायण आदि हैं। सामाजिक जीवन संबंधी और घरेलू चित्र भी बनाए गए। इनमें चित्र संयोजन उत्तम है, चमकदार रंगों का प्रयोग किया गया है, प्रकृति का चित्रण अलंकारिक है।

(2) बूँदी शैली — बूँदी चित्रण शैली में रेखाएँ कोमल, गतिपूर्ण एवं भाव प्रधान हैं। स्त्रियों का शरीर दुबला एवं पुरुष हृष्ट - पुष्ट दिखाए गए हैं, प्रकृति को उद्दीपन रूप है। चित्रों की पृष्ठभूमि में प्रकृति चित्रण है। पशु - पक्षियों का चित्रण अलंकारिक है।

(3) कोटा शैली — राजा उम्मेद सिंह ने जंगलों तथा शिकार के चित्र बनवाए। इसके अतिरिक्त भागवत् पुराण, [illegible] रामायण महाभारत, रसिक की प्रिया आदि विषयों पर चित्र बनाए गए। इन चित्रों में पुरुषों को घंटाकार पायजामा पहनाया गया है भारी दाढ़ी और चौड़ी माथा है स्त्रियों का गोल मुख और लंबी बाहें हैं। प्रकृति चित्रों में वृक्षों पर मोर तोते आदि बने हैं। रंग उष्ण और शीतल दोनों प्रकार के हैं। स्लेटी रंग की प्रधानता है।

(4) किशनगढ़ शैली— ~~पर मुगल~~ किशनगढ़ शैली पर मुगल प्रभाव है। प्रारंभ में आखेट और दरबार के चित्र बने, बाद में राधाकृष्ण (बन्नो का प्रदर्शन) मुख्य विषय रहा। गीत गोविंद, भागवत् पुराण और बिहारी चन्द्रिका पर भी चित्र बने। चित्रों में चटक रंग और भावपूर्ण रेखाएँ हैं। नारी सौंदर्य का चुंबकीय अंकन है। राधा-कृष्ण का आत्मा - परमात्मा के रूप में प्रतीकात्मक चित्रण है।

(5) जयपुर शैली — राजा भगवानदास ने उद्यानों की छतरियों पर चित्रकारी ~~कसन~~ करायी और बाद में सवाई जय-सिंह और महाराणा प्रताप के चित्रों की प्रमुखता है। अन्य चित्रों के विषय लोक-जीवन, बारह मासा, कृष्ण-लीला, गीतगोविंद आदि हैं। महलों, मंदिरों आदि पर भित्ति चित्र बने हैं। चित्रों के रंग चमकदार हैं तथा सोने और चाँदी के रंगों का प्रयोग हुआ है। चित्रण ~~प्रतीकात्मक~~

प्रतीकात्मक है। पुरुष तलवार लिए हैं जिनकी मूँछें हैं, दाढ़ी नहीं। स्त्रियाँ स्वस्थ एवं मध्यम कद की हैं। पशु-पक्षी चित्रण सजीव व भावपूर्ण है।

(6) बुंदेलखण्ड की चित्रकला — यहाँ की चित्रकला पर मराठी तथा ~~रा~~ राजस्थानी चित्रण शैली का प्रभाव है। चित्रों के विषय राग माला, चित्रावली, रसराज, बिहारी सतसई और कृष्ण-लीला हैं। परंपरागत चित्रण शैली में पीली पट्टी पर चित्र बने हैं, कुछ चित्र चमड़े पर भी बने हैं। गहरी पृष्ठभूमि पर सफेद रंग मिलाकर चित्रण किया गया है। चित्रों के ऊपर काव्य पंक्तियाँ लिखि हैं, कुछ चित्रों के शीर्षक उर्दू में भी हैं। रंग योजना सरल है। पशु-पक्षियों का सुंदर चित्रण है।

(7) जोधपुर शैली — मारवाड़ी शैली का प्रमुख केन्द्र जोधपुर रहा। राजा मानसिंह के समय में यह शैली

परिपक्वता को प्राप्त हुई। चित्रों के विषय रामायण, शिवपुराण, दुर्गा चरित आदि ग्रंथों पर आधारित हैं। पुरुष घनी दाढ़ी व मूँछों वाले हैं तथा स्त्रियों की आकृति लंबी और मस्तक आगे निकला हुआ बना है। चटक रंगों का प्रयोग किया गया है। भवनों पर सफेद रंग से लिखा गया है। मयूर चित्रण है और प्रकृति में कले मेघ, बिजली और स्वर्णिम आभा की छटा है।

(ख) पहाड़ी चित्रण शैली — पहाड़ी शैली में राजस्थानी और मुगलकालीन कला का मिश्रण है। 17वीं शताब्दी में वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार पहाड़ी क्षेत्रों में हुआ और कई शैलियाँ विकसित हुईं —

(1) बसोहली (बसौली) की चित्रकला — जम्मू राज्य की सीमा में आने वाली तहसील बसौली की चित्र शैली परंपरागत है। इस पर बाह्य